Social Groups and its classification

समूह मानव जीवन की एक महत्त्वपूर्ण वास्तविकता है। मनुष्य जन्म से लेकर न केवल विभिन्न प्रकार के समूहों में रहता है बल्कि निरंतर नये समूहों का निर्माण भी करता है। समूहों के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। साधारणतः समूह से पृथक व्यक्ति के व्यक्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। समूहों के माध्यम से ही व्यक्ति का समाजीकरण और व्यक्तित्व का विकास होता है। समूह के माध्यम से ही व्यक्ति समाज के मूल्यों को ग्रहण करता है। मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि व्यक्ति अपने एक मूल प्रवृत्ति 'ग्रिगेरियस इन्सटिंक्ट' (Gregarious Instinct) के कारण ही समूह में रहता है। सामाजिकता के विभिन्न अंशों के कारण ही कुछ व्यक्तियों का समूह से घनिष्ठ संबंध होता है तो कुछ का कम। मनुष्य समूह में रहकर ही विभिन्न प्रकार के भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरणों के साथ सफल समायोजन कर पाता है। समूह में ही उसकी सीखने की क्षमता का पूर्ण विकास होता है। समूह में ही रहकर व्यक्ति भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में काम करना सीखता है तथा विषम परिस्थितियों में भी साधारणतया नहीं घबराता है। इससे व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में काफी सहायता मिलती है।

साधारणतः समूह शब्द का प्रयोग कुछ व्यक्तियों के संगठन के लिए किया जाता है जिसमें परिवार, भीड़, सामाजिक वर्ग, विभिन्न धार्मिक वर्ग, व्यवसायिक वर्ग, विभिन्न प्रजातियाँ आदि सम्मिलित किये जाते हैं। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में सामाजिक समूह की अवधारणा को यद्यपि अनेक आधारों पर स्पष्ट किया गया है लेकिन कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताओं के आधार

पर हम इस अवधारणा को निम्नांकित रूप से समझ सकते हैं —

मैकाईवर का कथन है "समूह से हमारा तात्पर्य किसी भी ऐसे समूह से (संग्रह से) है जो सामाजिक संबंध के द्वारा एक-दूसरे के समीप रहते हैं।" इस कथन से स्पष्ट होता है कि जब तक कुछ व्यक्ति पारस्परिक जागरूकता और सहयोग द्वारा सामाजिक संबंधों की ~~आवश्यकता~~ स्थापना नहीं करते, तो उनके द्वारा सामाजिक समूह का निर्माण नहीं हो सकता।

आगबर्न तथा निमकॉफ ने अपने मत को व्यक्त करते हुए कहा, "जब कभी भी दो या दो से अधिक व्यक्ति समीप आकर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।" इस परिभाषा के द्वारा आगबर्न ने स्पष्ट किया है कि कुछ व्यक्तियों द्वारा एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने के अतिरिक्त उनका शारीरिक रूप से कुछ समीप होना भी समूह निर्माण के लिए आवश्यक है।

बोगार्डस के अनुसार- "एक सामाजिक समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों की एक ऐसी संख्या को कहते हैं जिनका ध्यान कुछ सामान्य उद्देश्य पर हो और जो एक-दूसरे को प्रेरणा दें, जिनमें शक्ति हो और जो सामान्य क्रियाओं में सम्मिलित हों।"

उपर्युक्त परिभाषाओं में विद्वानों ने सामाजिक समूह के दो प्रमुख तत्वों (i) व्यक्तियों का संग्रह तथा (ii) सामान्य उद्देश्य, पर अत्यधिक बल दिया है जबकि मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि व्यवहारिक स्तर पर तो नहीं परन्तु सैद्धान्तिक स्तर पर एक अकेला व्यक्ति भी समूह का निर्माण करता है। अकेला व्यक्ति सदैव अपनी चेतना में अन्य व्यक्तियों से

संबंधित विचारो को समाहित किये हुए रखता है जिसके फलस्वरूप वह अपने कार्यों को सम्पादित करता है। जहाँ तक समूह के सामान्य उद्देश्यों का प्रश्न है तो कूले का मानना है कि प्राथमिक समूह ऐसा समूह है जिसके निर्माण से पूर्व किसी उद्देश्य की आवश्यकता नहीं होती है। उदाहरणस्वरूप बिना किसी उद्देश्य के ही व्यक्ति को परिवार की सदस्यता मिल जाती है। परन्तु सामान्य अर्थों में सामाजिक समूह की उपर्युक्त विशेषताएँ सही है।

समूह को व्यापक रूप से समझने के लिए इसके प्रकारो को समझना आवश्यक हो जाता है। परन्तु इस संबंध में हमारे सम्मुख यह कठिनाई आ जाती है कि समूह के अनेक प्रकार होते हैं। एक परिवार, जाति, व्यवसायिक या खेल समूह आदि अनेक प्रकार के समूह हम अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में देखते हैं और एक ही समय में अनेक समूहों के सदस्य भी होते हैं। इसलिए यह स्पष्ट रूप से इंगित करना जटिल हो जाता है कि समूह इस प्रकार के होते हैं तथा समूह के ये ~~के~~ कारण होते हैं। फिर भी समाजशास्त्रियों ने भिन्न-२ आधारो पर सामाजिक समूहों को समझाने का प्रयत्न किया है।—

FICHTER — इन्होंने प्रकार्य को आधार मानकर सामाजिक समूहों की चर्चा की है। इनके मतानुसार सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए छः प्रकार के प्रकार्य होते हैं जिसे पूरा करने के लिए छः प्रकार के समूह की आवश्यकता होती है।

1. Familial group :- इस प्रकार समूह की चर्चा करते हुए Fichter ने वो प्रमुख सामाजिक आवश्यकताओं की चर्चा की है जिसके

फलस्वरूप इस प्रकार के समूह का निर्माण होता है।

A. Biological
B. Social (Socialization)

उपर्युक्त प्रकार्यों के फलस्वरूप इस प्रकार के समूह का निर्माण होता है। परिवार एक ऐसा ही समूह है जो एक तरफ व्यक्ति की जैविकीय आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है।

2. Educational group — प्रत्येक समूहों को अपने आने वाले सदस्यों को शिक्षित करने की आवश्यकता होती है परिवार में यह प्रक्रिया सामाजीकरण के द्वारा चलाई जाती है। जनजातीय समाजों में भी इस प्रकार के समूह पाये जाते हैं जिसे Fichter ने youth organization (युवा गृह) कहा है। जहाँ व्यक्ति अपने समाज के नियमों मूल्यों तथा संस्कृतियों आदि को सिखता है।

3. Economical group — Fichter के अनुसार किसी भी अर्थव्यवस्था के तीन प्रमुख तत्व होते हैं — A. Production
B. Distribution
C. Consumption

उपर्युक्त विशेषताएँ जहाँ पाई जाती है वही हमारा Economic group होता है। अर्थात इस प्रकार के समूह का कार्य व्यक्ति अथवा समाज के आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना है।

4. Political group - वह समूह जो समाज में अनचाहे या विघटनकारी कार्यों को करने से रोकता है। व्यवहारों के नियंत्रण में इस प्रकार के समूह का व्यापक हाथ होता है। सामाजिक

राजनीतिक व्यवस्था को लागू करना तथा सही अर्थों में इसे कार्यान्वित करना इस प्रकार के समूह का प्रमुख कार्य होता है। बृहद अर्थों में देश की राजनीतिक पार्टियां भी इस प्रकार के समूह का निर्माण करती

5. Religious group :- इस प्रकार के समूह का कार्य लोगों के बीच धार्मिक विश्वासों को स्थापित करना तथा उनके अनुरूप कार्यों को सम्पादित कराना होता है।

6. Recreational group - यह समूह समाज में मनोरंजनात्मक कार्यों को पूरा करता है। पारसन्स के अनुसार परिवार भी एक मनोरंजनात्मक समूह।

Fichter का यह कहना की एक प्रकार के कार्य के लिए एक विशेष प्रकार के समूह की आवश्यकता होती है सही प्रतित नहीं होता है। अनेक प्रकार के कार्य एक ही समूह कर सकते हैं। परिवार एक ऐसा ही समूह है जो उपर्युक्त सभी प्रकार के आवश्यकताओं को पुरा करता है।

ROBERT BIERSTED :- इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'Social Order' में समूह के वर्गीकरण को स्पष्ट किया है। समूह के प्रकारों की चर्चा करने से पहले इन्होंने तीन गुणों (Attributes) की चर्चा समूह के संदर्भ में की है :—

→ Attributes of social group
- Consciousness of Kind
- Social Interaction
- Social Organization

इनका कहना है कि सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वही समूह सम्पूर्ण समूह है जिसमें उपर्युक्त तीनों प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती

हो। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर उन्होंने समूह के चार प्रकारों की चर्चा की है —

1. Stahistical group — वह समूह जिसे साधारणतया हम table या chart के रूप में देखते हैं। उदाहरणस्वरूप जनगणना संबंधी आकड़े इसी प्रकार के समूह को स्पष्ट करते हैं। इस समूह में उपर्युक्त कोई भी विशेषता नहीं पाई जाती है। इस कारण यह चर्चा का विषय बना हुआ है कि जब इस समूह में उपर्युक्त विशेषताएँ नहीं है तो इसे समूह न मानकर category कहा जाना चाहिए। इस समूह की सार्थकता यह है कि थोड़े से आकड़े को देखकर समाज की समग्रता को समझा या सम्पूर्ण समाज के संदर्भ में परिकल्पना किया जा सकता है।

2. Societal group :— ऐसा समूह जिसमें सामूहिक सचेतता तो होती है परन्तु उसमें संगठन और अंतःक्रिया का पूर्णतया अभाव होता है।

3. Social group — इस समूह के सदस्यों के बीच सचेतता तथा अंतःक्रिया होती है परन्तु संगठन का अभाव होता है। एक रेल में बैठे यात्रीगण इसी प्रकार के समूह का निर्माण करते हैं।

4. Associational group — इस समूह में समूह की तीनों विशेषताएँ पाई जाती है। Bierstedt के अनुसार जितने भी secondary group है वे सभी associational group के उदाहरण हैं।

समाजशास्त्रीय अर्थ में associational group ही सम्पूर्ण समूह है क्योंकि इसमें ही समूह की उपयुक्त तीनों विशेषताएँ पाई जाती है। इस प्रकार के समूहों में relative permanency होती है।

-: MENDIETA :-

इन्होंने दो परिस्थितियों में चार प्रकार के समूह को स्पष्ट किया है।

A. Natural in Birth and Growth.

1 Structural group - वैसे समूह जो आपस में मजबुत या समग्र होते हैं। इस समूह के समस्त इकाई आपस में सम्बन्धित होकर एक संस्थानात्मक समूह का निर्माण करते हैं। उदाहरणस्वरूप परिवार, राज्य, जाति आदि न केवल सही रूप से संबंधित है बल्कि अपने जन्म और विकास के संदर्भ में प्राकृतिक भी होते हैं।

2. Structural Quasi group - इस प्रकार के समूह में भी सभी इकाइयाँ आपस में गुंथे होते हैं परन्तु उस मजबुती से नहीं जैसा कि संस्थानात्मक समूह। राष्ट्र, वर्ग आदि इस समूह के उदाहरण है।

3. Occasional group - वैसे समूह जो परिस्थिति जन्य होते हैं। अवसर उपरान्त इस प्रकार के समूह समाप्त हो जाते हैं। Mob, Crowd आदि ऐसे ही समूह हैं परन्तु यह अपने जन्म और विकास में प्राकृतिक होते हैं।

B. Artificialy created -

4. Artificial group - इस प्रकार के समूह का जन्म तथा विकास प्राकृतिक या स्वतः नहीं होता है बल्कि यह कृत्रिम होता है। योजना स्वरूप ऐसे समूह का जन्म होता है। सभी Secondary group उदाहरण कहे जा सकते हैं।

आलोचकों के मतानुसार Structural group के संदर्भ में परिवार एक सार्वभौमिक संस्था अथवा समूह अवश्य है परन्तु इसके प्रकार, प्रकृति अथवा उद्देश्य अलग-अलग होते हैं। परिवार की सार्थकता भी भिन्न-भिन्न समाजों में अलग-2 होती है। राज्य के संदर्भ में भी यह बात लागु होती है। सम्पूर्ण

विश्व के संदर्भ में भी यह बात लागू होती है। राज्य का जन्म अथवा विकास स्वतः न होकर कृत्रिम तथा उद्देश्य पूरक होता है।

— संस्थनात्मक अर्थ समूह की परिस्थिति को मार्क्स ने जहाँ वर्ग चेतना माना है वही Mendieta का कहना है कि ऐसे समूह अर्थ समूह है। जबकि इसके विपरीत राष्ट्र (Nation) में एकता तथा समग्रता अत्यधिक होती है।

— कृत्रिम समूह के संबंध में Mendieta का कहना है कि ऐसे समूह का समाज में महत्व बढ़ता जायेगा तथा प्राथमिक समूह का महत्व धीरे-2 घटता जायेगा और समाज में dehumanization की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी परन्तु वर्तमान समय मे यह स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ता है।

SOROKIN — इन्होंने दो प्रकार के समूह की चर्चा की है :-

1 Unibonded (Unifunctional) इस अर्थ मे वैसे सभी समूह आ जाते हैं जो एक प्रकार के संबंध पर आधारित होते है। दूसरे अर्थों में वे समूह जो एक प्रकार के कार्य करते है। सभी प्रकार के Secondary group इसके उदाहरण माने जा सकते है।

2. Multibonded (Multifunctional) — वैसे समूह जो अनेक प्रकार के संबंध तथा कार्यों को सम्पादित करते है। सभी प्रकार के Primary group इस समूह के उदाहरण के रूप में समझे जा सकते है।

उपर्युक्त विवेचन एक दूसरे से भिन्न विशेषताओं वाले समूहों को प्रदर्शित करते है। अतः इस तर्क के आधार पर हम कह सकते है कि समाज में पाये जाने वाले सभी समूहों की प्रकृति और महत्व में समानता नहीं होती है इनकी विशेषताएं एक दूसरे से भिन्न होती है चाहे उन्हें किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाए।

— Ramesh